

ASHE ARCHIVES



पुस्तक संग्रहालय मुद्रण व अभिलेखन

THE PRESERVATION AND DOCUMENTATION OF INDIGENOUS MANUSCRIPTS

COMMITTEE

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ अथ नवग्रह विधिरिति ॥ द्वितीयः ॥  
आशा यः दूधया दानं स्ववत्तानिष्टं, वंता श्रीं हस्तं नकाव, यणासमास  
कायन रायं खाने, आशा यक क, व्यावृत्ता क, ॥ नन्दनानदिन सास्यका  
शीतया, यं खन, दयूय रायन वासन वाय, यं खदवन ॥ गिव, गकि, खदु  
रगवति, थिगुलि, अक्षय, दूधदाव, अक्षय ॥ न स (मल) सयान, अक्षय  
य ॥ ॥ कृम्यानि, गिकाध, खदान वाक रायं खया कानका, रौउयाह, का

आशा यः दूधया

1.427

कल २



ध्याय ॥ याता श्रीरुसलिवादाव वाक्कन म् ५ ॥ ध्यानायै, यीसासीया  
ध्याययातै स्वकान ॥ जवयिवलि, स्ववसयचवलि, (धासयाहकायाह  
याय ॥ अर्थयाययातै, यिकान, याक ॥ ऊजमानयातै स्वलिक ॥ धनवज ॥ ध  
विधि ॥ ॥ समूदलख, वृदि, वरु, इद्र, दधवचयू, गकचाय, दधिसरु  
जयाहग, धनस, कलससीत ॥ सचावसंचानयूय, यूवाक, स, त ॥ काया  
सवा, यचसूयकावान, गलयागस, यिदाव, अचागसक्रिवा, जका, यूका,

वान, जय, तिय ॥ चननगय ॥ वरु, सिधुन, रुनायाहगचक ॥ ऊजम  
का, अद्रवाल, दिष्टित ॥ गवश, स्वधुवा, धधिलिवासने, यचयनाकाग  
कललउआस, कधुयनाका, यचयकाकाग ॥ यैखदवने, यगयाव, वास्य  
ह ॥ जवकस, गिव, गकि, धयाखस, स्वधु ॥ धनखवस, रुगवनि, ॥ धया  
खवस, धधिलि ॥ धयाखवस, कस, गवल, कस ॥ धयाखवस, कस ॥ यैख  
याकनकनवलि, वन्दू ॥ गिव, गकि, याहवने, म्यासनेवश, कसकनेसि



भूमि ॥ कुरुया, हवन, गवदे जा ॥ पाथया ययार्त, वलियाट २ ॥ खवस, यश्च  
 वलि, म्याल नैवय ॥ गवउजा ॥ उवस, लि वलि ॥ अथर्वन वदिया हवन, आ  
 लकास, योसावकाव, कुरु, लउजा ३ थया हवन, अर्थया ॥ कुरु, खधु  
 रुगवति, थलिलि, कुरु, वलि, कुरु, लउजा ३ थनरु, आकासमाल ॥ थ  
 नवसयविधि ॥ ॥ गता थलिलि वाय ॥ वं कुरु लिगलस ॥ वउसमचरु  
 ॥ लिह सिच ॥ सिंधु थायकायालम ॥ सयसालाव, धाला ॥ थमिनिर्ध ॥ उ

याट १ ॥ खलय ॥ वं सास्य वादाव, वन वासनवायाव, उने ॥ हवन, वन्दू, अ  
 र्धया ॥ लि वन, कुरु, ॥ उऊ मानय थराऊन ॥ सूर्यार्ध ॥ गुनूतमस्कास  
 ॥ उयचधु मूलन, कल, अरु न्यास ॥ उलयाय, अर्थयाउयजा ॥ रुगस  
 द्वि, आत्मयुजा ॥ वास अनामिकादयन, वामावरुन, अर्थयाया दकन,  
 थलसगिधोया कर्न ॥ उयचधु गायतिन ॥ वउसमचरु ॥ कायालन, सि  
 धथायाव, लायलय ॥ धूपलय, गनक ॥ उयचधु चकवाय ॥ वाय धू

थलसचउ ४ स्तिका न ४३



नदाव श्रुतग, दारुसुत ॥ ॥ कुरुयादवन, उच्चूत्रवाजवाय, धूपस्य  
गन्तक ॥ यन न्यानथाने ॥ वधूनाय

यदयं, न्यानथाने ॥ सयजलि म्यालानयय ॥ सिधन, अर्कचधुयादवाय ॥  
दिष्टि ॥ कधुयगाक, यकयगाक ॥ उकखानगत सचचक ॥ यजन ॥ विद  
व ॥ असिगाकादि ॥ वृद्धवधुदि ॥ उयचधु ॥ मूलमन्त्र ॥ सकालकूट ॥ अ

वाक् ॥ आवाक् ॥ यानिमूडा ॥ ॥ अथथधिलिपूजा ॥ तानसा उयचधुद्वय  
निखादयाय ॥ मन्त्रागसा, मिया अलिनखाय ॥ आवाक् ॥ मूडा ॥ धूप, दीपन  
वेश ॥ जाय, साय ॥ संवर्क, मार्कन्दवा, जादवी, कुरुया ॥ अगम ॥ आदि ॥ त  
र्यन ॥ आवाच्यते, धमविन्दूकाय ३ ॥ वसि विसर्जन ॥ वसि वाहा थायमका  
य ॥ थधिलिप्त, सिधु निरीठन, संखउन्दिहवत साचकयूय ॥ थधिलिप्त  
वश्कुरुसिव २ ॥ सवाजनदायक ॥ रुनियनिली, वयूचक ॥ कलकनहायः



कं ॥ वीणा रुसनरुस खधु कथिद्रहा विद्याचकाव थव २ थायसग ॥ ॐ तिथ  
धु सिचाय विधि ॥ ॥ गवहाव वं कसित न स दव का लवन आचादक  
खं देव सचा सहिक शर्व न स स्य का लवन ॥ सिमि पूजा १ वलियाट २ ॥  
आचार्य व दव चावहिक शर्व न स स्य न पूजन याय ॥ स्वर्थाद्य ॥ पुत्र न  
स स्काय ॥ उग्र च धु मूलन कन अरु न्यास ॥ उलयाय अर्घ्याय यय ॥ ॐ ॥  
रुगसुदि आत्मयुजा ॥ सागसा उग्र च धु दयुलि मलागसा ॥

पिदव ॥ आधा न सक त्यादि ॥ सिहासनाय नमः ॥ ध्यान ॥ नूद च धुदि ॥ पि  
या ऊरि ॥ यगु ॥ लाक महावलि न धूनक ॥ आवा ऊ ॥ मूडा ॥ धूय दाय ने  
वय ॥ जाय रुग ॥ सवर्ला मार्क देवा आदवी ॥ अरुग न्यादि ॥ गर्थन ॥ व  
लिविसुर्जन ॥ वलिसी गि काय ॥ खधु रुगवृत्ति अरु न विसुर्जन ॥ यादवी  
यदयाव दव सचा सहिक शर्व रुगवृत्ति हय ॥ मार्क न्यया यदयाव थम  
खधु काय ॥ रुलिय निस्थ कलक न हायक वयस्वक ॥ कनहयाव वीणा न



चन, इत्यहाव, लघु, लखालस, सन्तानयाय ॥ यूजा १ ॥ आचार्यन, यश्च  
 मृगसन्तान ॥ चरु, सिन्धु, खान ॥ यजन ॥ गियाञ्जलि ॥ मारु ॥ मार्कन्यथा, जाद  
 वी ॥ मृगश्रमादि ॥ लिहाविश्याचक, मूलचक्रवर्गा रुसनरुल, यिनामूल, स्व  
 धुकाभिस, इहाविश्याचक ॥ यवा २ थयसग ॥ x ॥ थनवाकनयूजा ॥ ॐ  
 दसासन, यादार्घ, हस्तार्घ, यूषा, मृगश्रमादि ॥ उजमान, स्वस्तिकसवि  
 श्याचक ॥ न्यासयाचक ॥ उयाश्वासी, उजमानयावाहागस, लखनहाय, च

लन, स्वस्तिकचाय ॥ मृगाग, दारुचन ॥ यजन, हस्तयूजा ॥ उयाश्वासी, स्व  
 धुकायाव, मूलनयादिनादवी, यदवी, उजमान, सकलदत्ताहाव, थका  
 लिउजमानज्ञाय ॥ निवर्कनादि ॥ वदार्चन ॥ क्रसकन, उचासग ॥ यश्च  
 मृगसन्तान ॥ चरुसिन्धु, सग्वन, खान, ग्यास, स, देवश्रादिन, उजमान  
 नविये ॥ मृगीवदि ॥ यगिस्त्रा ॥ यूर्ध्वधु ॥ क्रसकनथायसग ॥ मृगीधि ॥  
 पूनउयाश्वासी, स्वधुकायाव, मूलनयादिनादवी, यदयाव, उजनत्वाहाव,

गियाञ्जलि







तर्थात् नवतत्त्वाश्चैवं मातुः। मारुतजगदाज्ञादं चकस्वर्ग्येसीम्भिः॥३॥  
 गर्भरुग्मवगिद्वी, ल्वभवयनमं ग्वनी। द्रुग्मर्ज्वनेयवस्थामि, यनम्यगुनूरा  
 स्कर्त्तुं॥ यनस्यननमायुन, गक्त्वाकविनासर्तुं॥ ततायुजर्तुं॥

॥ गुरुवक्त्रागुचं दिक्षु ल्यादि ॥ आत्मयज्ञाय नमः ॥ यद्वा सनाय  
नमः ॥ कर्मासनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं मृद्व्यह्नये नमः ॥ ॐ ह्रीं रुद्राय  
ॐ स्वस्ति ॥ चै. दक्षनासाय नमः ॥ ज्ञे. वासनासाय नमः ॥ मे. दक्षिणाय नमः ॥ क्रौ.

वामनय ॥ लंदकिनक (ध्रु) ॥ कूं वामक (ध्रु) ॥ लूं डिक्का (य) ॥ मूं ददि ॥ चूं गुक्का  
॥ लूं सित्रमि ॥ कूं कूं रुट्टा हास सर्वांग ॥ ॥ न्यास ॥ ॐ कूं मृत्पूरु नः श्रीका  
य रुट्टा ॥ क लुसा धनं ॥ ॐ कूं नाऊयदक निष्काय नमः ॥ ॐ कूं मूं ड गच  
॥ मृनामिका यो स्वाहा ॥ ॐ कूं त्रियू मर्धनि मध्व माये वाषट् ॥ ॐ कूं कूं ॐ स  
दा नक्त २ गऊ न्याय कूं ॥ ॐ कूं लूं मां कूं सः श्री मुष्ठा य वषट् ॥ ॐ कूं मृत्पूरु  
नः श्रीकाय रुट्टा ॥ ॐ गि कलं न्यास ॥ ॥ ॐ कूं नाऊयद दद या य नमः



॥ ॐ ह्रीं क्लीं उग्र च ॥ ॐ सि प्र स स्वा हा ॥ ॐ ह्रीं क्लीं त्रिपु म ध नि सि स्वा य वा षट् ॥  
 ॐ ह्रीं क्लीं ॥ सदा न क र क व चा य ह ॥ ॐ ह्रीं क्लीं मी रं स ॥ ने ष ण या य व ष  
 ट् ॥ ॐ ह्रीं क्लीं मृ त्यु ह न श्र मा य रु ट् ॥ ॐ ति श्रु न् न्या स ॥ ॥ हं या दो ॥ त्रं जं  
 ये ॥ हं जा नो ॥ मं उ न्न ॥ सं क ॥ दे ता हो ॥ वं उ य न्न ॥ यं ह द य ॥ ॐ म  
 ख ॥ श्रं मि न्न ॥ ॐ ति वि द्या न्या स ॥ ॥ गता ऊ र या य यू जा ॥ ॐ न ऊ र  
 या या स ना य न म ॥ ॐ न श्रुं गी उ र या य रु ट् टा त्रि का य ३ ॥ ष उ न्न ॥ श्रा वा

क ॥ ॐ न्न मा नि मू डा ॥ उ य च उ गी य ना न, सर्व द य या कृ नं ॥ ॐ न उ य च उ  
 य वि द्य ह, इ र्मा द वी धी म ह, ग ता च वि य वा द या त् ॥ ॐ ति ऊ र या य यू जा ॥  
 ॥ ॥ गता ऊ र या य यू जा ॥ ॐ न श्रुं गी उ र या या स ना य न म ॥ श्रुं गी उ र या य  
 गी श्रुं गी उ र या य रु ट् टा त्रि का य ३ ॥ ष उ न्न ॥ श्रा वा क ॥ या नि, वि न्न मू डा ॥ ॥  
 उ न्न गु णि, श्रा वा य ॥ ॥ मा र्त्त नी य ॥ य श्र व सि द या त् ॥ ॐ न श्रुं  
 म य न्ना स ना य या इ की ॥ ॐ न श्रुं गी कृ र यू य व द्दे क ना य या इ की ॥ ध न व सि



॥ नै न गौ को वू दवी पूव वर कता थय, कपिल जगता रा न रा खय, पितृ यः  
का लामुख, ॥ नै न गौ को वू उहिरु गवन रू न व वू यत, य (थय री ना ता व सि गृ  
२ स्वा हा ॥ नै न नवा सनाय पाइ की ॥ नै न गौ को वू यस्त न दि य, दस्त की य  
वी महा धी न य पा ला य पाइ की ॥ व सि ॥ नै न गौ को वू नौ नौ नौ नौ, ॥ रु व  
स्व ना धिय तय, यथ ना म्भ, श्रव न न २ म धु स ॥ नै न गौ को वू स (ध, च रु रु रु का  
श्रव दाम, रु ट क, सू ना या न य, महा क प ज मा ॥ नै न गौ को वू ला र न ध य, वि य

कोटि स म य रा य, उहिरु गवन रू न व वू यत, य (थय री ना ता व सि गृ  
२ स्वा हा ॥ नै न गौ को वू नवा सनाय पाइ की ॥ नै न गौ को वू नौ नौ नौ नौ, ॥ रु व  
व सि ॥ नै न गौ को वू यस्त न दि य, दस्त की य  
जा, कस्त जा, थक चि न या गि नी नी, रु च नी, रु च नी, (ग व नी मि क नी, म  
रु व नी, विस च नी, नका रु नी, दि रु नी, पि रु नी, व रु ४ य रु, वट, सका रु  
क, नवा रु नी नी, पि रु ग म म नी नी, य (थय री ना ता व सि गृ २ म मे सि धि क



वृद्धं ३ रुद्रं स्वाहा वसिष्ठं २ स्वाहा ॥ नैऋतं यतासनाय यादकी ॥ नैऋतं शुक्रं  
 ग्रासिद्धिं वामं धुम्बरीययाय यादकी ॥ वसिष्ठं ॥ नैऋतं मूसामनाय यादकी ॥  
 नैऋतं गंगं गंगं ॥ गंगं गंगं ॥ गंगं गंगं ॥ देवीययाय ॥ सर्वविघ्ननासय ॥  
 सिद्धं २ स्वाहा ॥ वसिष्ठं ॥ आवाञ्च ॥ दधु ॥ गङ्गाती ॥ यानि ॥ विन्दु ॥ गङ्गा  
 दा ॥ जाय ॥ योऽङ्गो स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा ॥ यो स्वाहा ॥ शुभं स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा ॥ थ  
 न सीधान १० ॥ स्वाहा ॥ ॐ श्रीयूगं कर्मालीयादि ॥ ॐ ॥ विन्दुयय ३ ॥ ॐ

गियञ्च वसिष्ठं ॥ ॥ ग्रासीवस्तान आवाञ्च ॥ नैऋतं आवादि कर्मावाह यामि ॥ शुभं  
 नक्तमधुसूताया आदिदव यादकी ॥ पूजयामि ॥ विदव, यानि ॥ थ विस्तिख  
 धु, रुगवति ॥ थ स्वस्तिनीमाल ॥ थ व २ मन्त्रनवति ॥ आवाञ्च ॥ मूडा ॥ ॐ तिगि  
 दव पूजा ॥ ॥ गंगा कलसा चर्त ॥ गिवक्त स पूजा ॥ न्यास ॥ मूकन, कन  
 साधन ॥ श्रुधान्त्रां कनिष्ठकोयनम ॥ ॐ ह्रीं दि, कन, मूकन्यास ॥ ० ॥  
 गंगा मूक गङ्गा पूजा ॥ ॐ कौं धर्माय नमः ॥ ॐ कौं ज्ञानाय नमः ॥ ॐ कौं वे



नाना लोकां संयन्ती, नाना वर्ण विचिन्तयन् ॥ दमवाक्कमहाद्यानी, च  
वर्णासूत्रालसं सर्ववर्ण धर्मादवा, मथस्यामी विचिन्तयन् ॥ कया लं च वय  
द्वाम्, मन्यत्येव सुगुलधृक् ॥ उमन्त्रा क्रमात् ॥ रुत रुक्म निवसेयन् ॥  
गजवर्म धनावाही, रुक्मो रुय विकारिणी ॥ गजु किं सा वधनादं, सर्वका  
वधका वधं ॥ रुक्मिणि चिन्तयन् वार्धि, विष्णु ग्वन्महं ग्वन् ॥ स्वायमा ना  
नटं ताता, गायमाता विरुदिता ॥ रुदयनि गिगूलन, चंदयनि महासि



ना। कुडरावाधनं गीती, पूर्वव्याधि विचि न यत् ॥ गत्या यविता मेका जः ॥  
 गतत्वावधि सिंगी ॥ गिराख न्द न्द व व गी ॥ गत्या यविता मेका जः ॥ ॥  
 गवस सन य ॥ थ स्थानं ॥ गुड रू टि के सी का सी, क ॥ (७) न्द्र हि म सी नि रं ॥ गु ज  
 मू का वलि हात्र, ॥ य ग च न्द न स्तुति गी ॥ साम म धु स म ॥ थ लं ॥ एक व का वि  
 ला च नं ॥ ॥ य ग य भा स न स्तु, व द्वा य भा य वि लि गी ॥ च गु रु उं वि सा ना रं  
 व स दा रु य या नि रं ॥ ॥ य र्ध व द्वा नि रं गु रं ॥ अ म्भ ग न व द्वा वि रं ॥ द न्द्र ह स

उक ल सी, वा म वे च द्वा म धु लं ॥ वा मा च र्ध अ या द वी, ॥ एक व का वि ला चः  
 ती ॥ ॥ य ग व ध्वा म हा द वी, व न दा रु य या नि ती ॥ ॥ स र्व न्द्र क ध या द वी, स  
 र्व का म य दा य ती ॥ ॥ म हा म ह्यं ज य द वी, अ म्भ ग न व रं न रं ॥ ॥ व द्वा त्वा म  
 हा द वी, स र्व या य रु या य च ॥ ॥ नि ध्वा नं ॥ ॥ ग ना य ज नं ॥ ॥ ॐ कौं कौं ॐ  
 म ना य उ र्ध व का य न म ॥ ॥ ॐ ह्या दि य अ व क न सी य ॥ ॥ ॐ कौं वा मा य  
 न म ॥ ॐ कौं अ सा य न म ॥ ॐ कौं नो र्ध न म ॥ ॐ कौं का र्त्त न म ॥ ॐ कौं



कलवि कर्षि नमः॥ ॐ कौ वलय मथे नमः॥ ॐ कौ लुगद मनि नमः॥  
ॐ कौ मना सनी नमः॥ कथा यत्तु यत्तु ॥ ० ॥ गता श्रुत यत्तु यत्तु ॥ ॐ कौ  
कया सरे नवाय नमः॥ यत्तु ॥ ॐ कौ मिखि वाहन रे नवाय नमः॥ आश्र  
॥ ॐ कौ कार रे नवाय नमः॥ दक्षि ॥ ॐ कौ विक नास रे नवाय नमः॥  
॥ नेपथ्य ॥ ॐ कौ मर्म थरे नवाय नमः॥ यन्त्रि म ॥ ॐ कौ मघन दरे  
नवाय नमः॥ वायू वा ॥ ॐ कौ सा म ना जरे नवाय नमः॥ उरु न ॥ ॐ कौ

विद्या वा जरे नवाय नमः॥ उगी म न ॥ ॐ ति श्रुत यत्तु यत्तु ॥ ॥ गता व  
तिसिया गिनी यत्तु ॥ ॐ कौ श्रुत यत्तु यत्तु ॥ ॐ कौ धां घु यत्तु यत्तु ॥ ॐ कौ  
प्र म हा ना सा यत्तु यत्तु ॥ ॐ कौ कौ सु म्हा यत्तु यत्तु ॥ ॐ कौ कौ यत्तु यत्तु ॥  
ॐ कौ धां घा यत्तु यत्तु ॥ ॐ कौ व सो म्हा यत्तु यत्तु ॥ ॐ कौ धां हा मा यत्तु यत्तु  
॥ ॐ कौ व म्हा व ना यत्तु यत्तु ॥ ॐ कौ व क या यत्तु यत्तु ॥ ॐ कौ व विज या यत्तु  
यत्तु ॥ ॐ कौ व म्हा यत्तु यत्तु ॥ ॐ कौ व म्हा यत्तु यत्तु ॥ ॐ कौ व म्हा यत्तु यत्तु



हात्कटायोनमः॥ ॐ कौर्व विनूयायोनमः॥ ॐ कौर्व गुस्कायोनमः॥ ॐ कौर्व  
 आकासमात्रायोनमः॥ ॐ कौर्व संहविधानमः॥ ॐ कौर्व जातहाविधान  
 मः॥ ॐ कौर्व दंडालिधानमः॥ ॐ कौर्व गुस्कात्रवतिनमः॥ ॐ कौर्व यियसि  
 नमः॥ ॐ कौर्व सः पूषसाविनमः॥ ॐ कौर्व आसितिनमः॥ ॐ कौर्व अस्याहा  
 विनमः॥ ॐ कौर्व रुद्रकासिनमः॥ ॐ कौर्व गुरुदायोनमः॥ ॐ कौर्व रुद्र  
 शीमायोनमः॥ ॐ कौर्व गुरुदिकायोनमः॥ ॐ निवतासिययषू वतासिः

यागिनीयूजा॥ ॥ ततादासयूजा॥ ॐ कौर्व कात्रसमूदायनमः॥ ॐ कौर्व  
 श्रीत्रसमूदायनमः॥ ॐ कौर्व दधिसमूदायनमः॥ ॐ कौर्व घनसमूदायनमः  
 ॥ ॐ कौर्व सूत्रादकसमूदायनमः॥ ॐ कौर्व शसमूदायनमः॥ ॐ कौर्व सि  
 धसमूदायनमः॥ ॐ कौर्व सागत्रसमूदायनमः॥ ॐ निदात्रसंयुक्त॥ ॥  
 गताषु (अन) आग्रायादिन ॥ ॐ मीतार्कयूजा॥ ॐ कौर्व श्रुधात्रकौददयाय  
 नमः॥ ॐ ॥ ॐ कौर्व धधानकौमित्रसखाहा॥ ॥ ॐ कौर्व धधानकव



ॐ गिरिवायवो षट् ॥ ॐ कौ सर्वत सर्व सर्व कवचाय नमः ॥ ॐ  
कौ कौ नजययाय वषट् ॥ ॐ कौ नमस्तु नृपय नमः ॥ अस्माय नमः ॥  
ॐ तिष्ठतु (जन आग्रयादिन शुभानां नमः संप्रदाय ॥ ॥ गता गिर्या अस्ति ॥  
अद्यावत् कौ थद्यावत् कौ ध्यावत् ध्यावत् नमः ॐ सर्वत सर्व सर्व कौ स ॐ कौ न  
नृपय नमः ॥ या इकी ॥ गिरिवा ॥ ॐ कौ कौ दद्याय नमः ॥ ॐ ह्यादि षट् (जन  
संप्रदाय ॥ मूल नवति ॥ ॥ गता गिरिवाय नमः ॥ ॐ कौ जयाय नमः ॥

ॐ कौ विजयाय नमः ॥ ॐ कौ अजिताय नमः ॥ ॐ कौ अयवाजिताय नमः ॥  
ॐ कौ जगन्नाथ नमः ॥ ॐ कौ सुसुता नमः ॥ ॐ कौ साहना नमः ॥ ॐ कौ आक  
र्षणा नमः ॥ ॐ कौ अद्यावत् नमः ॥ ॐ कौ वदना मूल नमः ॥ ॥  
गिर्या अस्ति ॥ ॐ कौ गौ संप्रदाय नमः ॥ गिरिवा ॥ षट् (जन ॥ वति ॥ आवाक  
॥ लिंग ॥ यानि मूला ॥ जाय ॥ कौ अद्यावत् स्वाहा ॥ ध्यावत् १० ॥ कौ स्वाहा ॥ ध्या  
वत् १० ॥ स्वाहा ॥ कर्षिकाय निदध्याकं यक्षसं तं महाद्वारं ॥ मी खवत् क गदा



यद्वा वनमालाविरूपति ॥ उतातननमाध्यायं ध्यायद्वा विमिश्रमिव ॥ सर्व  
 यायसाप्रस्थामै कायां रुदतनुवर्त्त ॥ चतुर्वर्त्तकं दमनु उतातातनकाजसा  
 रितं ॥ गज्जगत्त महाधार्त्तं द्वापि सुगकि संज्ञतं ॥ कयासखद्वान्न यत्र सुवि  
 त् ॥ उमनैर्वा क्रमात्रिकां ॥ विजयुर्वन्ववर्त्तयद्वा आयाध्यानिविचित्रयत्त ॥ अ  
 न्यद्वा रुद्रयायाश्च गजचर्मावृत्तवियर्त्त ॥ गज्जगत्त सीखनेनादं शोष  
 नेयाधिविचित्रयत्त ॥ गजत्वावधिरिक्तं सुखि कायत्र मन्वर्त्त ॥ मूर्तिभन

अविन्यास्य ग्वच्छन्दयुजयल्लग्न ॥ यन्वावाहयद्वा द्वा द्वा माला मधुसा  
 यानि ॥ द्वापि गजजगत्त मन्वर्त्तयद्वा अतिगुर्यददत्त ॥ अर्घ्यजलनसंतर्था म  
 दापूर्ववदमयत्त ॥ ततातनयाश्च मयश्च सागम मन्वर्त्त तद्वचयत्त ॥ ॥  
 गवत्तननय ॥ यत्त ॥ ततावधिसकलगीर्धजलनयुधै स्वच्छेपल्लव  
 सारियुधमाला ॥ उक्तेषु जातु विषयमूर्तिरियसक्तं लीकं सुमूर्तिमिव  
 वसकिं जगत्तनमा मि ॥ अग्नगन्धादि ॥ हुंतिमिव सकिकलसयुजा विधिः







उर्वरका प्रथमश्रुतं न्यासं कावयत् ॥ ० ॥ गतायूजने ॥ विद्वत् ॥ यन्मासना  
येनमः ॥ श्वानं ॥ सुवायुवेमं ध्यामानं ॥ शानाशं मागवंपुत्रं ॥ गतायूजनाम  
हादजी, दिव्यकन्यामनाम ॥ नानाकायमनिरोदवी, येनमागसमयः  
रा ॥ श्रुहादगजुजादवी, चर्तलंकोनरुषिणा ॥ सोम्यनृपधरादवी, वि  
नयानवजीवना ॥ स्वप्नप्रियमूलवज्रेश्वर, दिष्टिर्मसूत्रं तथा ॥ गदायन्म  
वर्तयानं, दक्षिणविनाजिनं ॥ रुतं वाक्कर्मद्वयं ॥ मधुखद्यानकक

या ॥ नितायूजने विन्दुं, वामहस्तविधायनी ॥ दिव्यचक्रकान्तया, रु  
मारुचधरुषिणा ॥ स्वगयन्मासनासीनावद्ययन्मासनस्त्रिणा ॥ उर्वश्चात्मा  
हादवी, वाचुनिदिव्यनृपिनी ॥ श्रुतिश्चानं ॥ ० ॥ गतायूजने ॥ वक्ताया  
दि ॥ नृपचक्रादि ॥ १ ॥ श्रुयावाक् ॥ श्रियाञ्जलि ॥ मूर्ति ॥ आनन्दमकिरेव  
वानन्दगीमहाविद्यानाञ्जली ॥ नृपकलकल ॥ रुहाविकायश्र  
लिमूर्त्ययादका ॥ श्रिधा ३ ॥ व ॥ उम् ॥ व ॥ लि ॥ आवाक् ॥







ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नाना यथा यथा सा रिता ॥ दिव्य वस्तु यन्निधानं म  
हिषासूत्रगमिनी ॥ किं वा निष्कृष्टा कात्रि, केयूने मति नो यूत्रेशत्रमासा  
विचित्रेश्वर, हात्रमासा वल्लभिने ॥ अष्टादशगुणो कोना, योनवद्वक्तृनीच  
हा ॥ सर्वालोकप्रसंयुक्ता, गति लोकादि समुपरा ॥ खड्गं गच्छा चर्कं, वज्रा  
कसंधं वायु रा ॥ वज्रदं तु मन्त्र हस्ताश्च, मूल पायस सा रिता ॥ दक्षिणे न  
क वाजना, यथा सा साग न था यत्र ॥ रुतकं धनू हस्ता च, गदाद्यध्वा म सा रि

ता ॥ पाशं गच्छंती हस्ताश्च, खड्गं गच्छंती गच्छंती ॥ विन्दु मूला गच्छंती, सिंहास  
यन्निधानं ॥ अथ लिख्यमिच्छन्ति, महिषाश्च महासूत्रं ॥ गच्छंती वा निगच्छंती  
देव्यं महावत्स यत्रा कर्म ॥ रुदयं गच्छंती मूल न, विधुना सा मित्रा चूहा ॥  
वंशं त्वामहादवी, सर्वका मरुत्सु यदा ॥ अथोपायसहसाश्च, खड्गं गच्छं  
मन्त्रं विना ॥ वृद्ध च ध्वज च ध्वज, च ध्वज च ध्वज नायिका ॥ च ध्वज च ध्वज  
ल्लेख, वधु चूपा निच धुिका ॥ वाचना अत्र ता कृष्णा, ता सा गूका गच्छंती मिका



[illegible]

ये या इ कां ॥ षण्ठ ॥ म (ध्व) वसि ॥ ॥ ग मा द्वा न यू ऊ नं ॥ जेँ रु ऋ औ ऋँ  
 ऋँ या सा य या इ कां ॥ चकस्य वाम द्वा न ॥ जेँ रुँ यौँ ङौँ क ल यू ष व दू क ना था य  
 या दू कां ॥ चकस्य श्रूय द्वा न ॥ जेँ रुँ गं गौँ गूँ ग॥ म्मौँ यौँ क ल ग (ध्व) व ना य या दू  
 कां ॥ चकस्य दक्षिण द्वा न ॥ जेँ रुँ यौँ यौँ सर्व या गि नी र्वा या दू कां ॥ चकस्य  
 यन्त्रि म द्वा न ॥ ॐ ति द्वा ल सौं यू अ ॥ ॥  
 जेँ रुँ उँ ङौँ लौँ लौँ लौँ लौँ ॐ डाय व दू रु स्मा य स्व म्म धि य न य या इ कां ॥ यू















याइकी ॥ स (अ) ॥ हनेतलिका ॥ संयुक्त ॥ ० ॥ श्रिया अलि ॥ विं ३ उं ३ कीना  
 ऊयद कुं उ य च ॥ छु वि प्र सु द नी रुं ३ सदा व रु २ ली मौ शी स ३ नृ ल्य रु  
 न याइ ३ की ॥ श्रि ३ ३ ॥ उं ३ कीना ऊयद द द या य न स ह्यादि ष उ ३ (अन  
 पूजन ॥ वलि ॥ धनयी, वलियो थू पाट स ॥ आवाक ॥ यानि, विन्दू मूडा  
 ॥ धूय ॥ दीय ॥ नेवय ॥ जाय ॥ मूर्ति स्वाहा ॥ ध्वज १० ॥ स्थाय ॥ द यानि  
 न ह्यादि ॥ नृग न्धादि ॥ वाकन ३ सह ॥ छु ति थ छु लि संयुक्त विधि

धुं स्वाहा १० ॥ २

॥ ० ॥ गता ख छु पूजन ॥ थ छु लि स या कां सकर्म स्वाद या मान ॥ वलिर्व  
 थू पाट स ॥ धूय ॥ दीय ॥ नेवय ॥ जाय ॥ स्थाय ॥ मार्क न्द या ह्यादि ॥ नृग न्  
 धादि ॥ वाकन सह ॥ छु ति ख छु संयुक्त विधि ॥ ० ॥ गता रु ग व ति पूज  
 न ॥ उ य च छु द रु वि रु क या य मान ॥ वलिर्व थू पाट स ॥ धूय ॥ दीय ॥  
 जाय ॥ नेवय ॥ स्थाय ॥ जाद वा ह्यादि ॥ नृग न्धादि ॥ वाकन सह ॥ छु  
 ति रु ग व ति संयुक्त विधि ॥ ० ॥ गता ध न्द्र पूजन ॥ धनलि, वलिया ख व

धुं स्वाहा

विलि १



म. चारु द्रव्य लवण यो धू पाटस युजते ॥ आसम्भरुत आवाहन ॥  
 लिदव ॥ जे न श्रु सिताऊ रे न वाय पाइ की ॥ जे न चूर रे न वाय पाइ की ॥ जे न  
 चधु रे न वाय पाइ की ॥ जे न काट रे न वाय पाइ की ॥ जे न उमरु रे न वाय  
 पाइ की ॥ जे न कयासि रे न वाय पाइ की ॥ जे न राखन रे न वाय पाइ की  
 ॥ जे न सीहा रे न वाय पाइ की ॥ धन ते वसि ॥ जे न थोय रुदी पद मूकी  
 दवी महा धी कंग पा लाय पाइ की ॥ जे न यो जा कल पूग वद्र के ता थार पा

७२

इ की ॥ धन ते वसि ॥ यून वसि विय ॥ जे न जे यो जा दवी पूग वद्र कना ध कयि  
 ले सु टाराला सु न गिन को ला मरु सु वि विघ्न ता सै य २ हा विधि २ मूद्र म  
 दू दू ३ कंग पा ल वद्र कना ध म ६ मी वसि पूजा गृह २ म म सौ नि क्र व २  
 दू रुट् ला हा ॥ ला क म हा वसि ॥ आवाक ॥ दधु मूद्रा ॥ धन यो धू पाट द न्यु स  
 पू ॥ ० ॥ न तो द धू पाट द न्यु युजते ॥ से व रुत आवाहन ॥ लिदव ॥ जे न  
 ज या ये पाइ की ॥ जे न विज या ये पाइ की ॥ जे न श्रु जि ना ये पाइ की ॥ जे न श्रु य ना







॥ सिद्ध... नवाय याइ की ॥ ॐ नृपियूनाक करे नवाय याइ की ॥  
 ॐ नृ अग्निवगासरे नवाय याइ की ॥ ॐ नृ अग्निजिह्वारे नवाय याइ की ॥ ॐ नृ  
 कासा करे नवाय याइ की ॥ ॐ नृ कयासि मरे नवाय याइ की ॥ ॐ नृ कयादरे  
 नवाय याइ की ॥ ॐ नृ सीम नृयरे नवाय याइ की ॥ ॐ नृ दाट करे नवाय या  
 इ की ॥ ॐ नृ गगधरे नवाय याइ की ॥ धतने वलि ॥ दूजन ॥ ॐ नृ नृगी मयूः  
 नृदोय विशुद्धि कादवी, विजयांत, नृगयालाय याइ की ॥ ध... नी व

ASHA ARCHIVES

ॐ नृ नृगी मयूः

1427

ASHA ARCHIVES







[illegible]



ॐ साकार्य, चमय पूष्य पाइकी ॥ अग्नि यय ॥ ॐ कौ सं ॐ ग्वन तत्वाय, ॐ उं  
च (अग्नि यय) कामात्री, चतु रे नवाय, कालाय नमस्तु कथ, अग्नि साकार्य,  
चमय पूष्य पाइकी ॥ दक्षिण यय ॥ ॐ कौ सं ॐ विद्या तत्वा धिय गय, ॐ अं च  
गुनायिकाय, वेष्म वी, को धरे नवाय, अष्टहास कथ, विष्णु साकार्य, च  
मय पूष्य पाइकी ॥ नैमल्य यय ॥ ॐ कौ सं माया तत्वा धिय गय, ॐ ऐं च छि  
न, वा, नादि उ नालु रे नवाय, अयनि महा कथ, उला कार्य, चमय पूष्य

पाइकी ॥ ॐ कौ सं कला तत्वा धिय गय, ॐ ऐं च धु वल्य, अन्दाय  
नी, कयाला सरे नवाय, चलि य कथ, लून साकार्य, चमय पूष्य पाइकी  
॥ वायू यय ॥ ॐ कौ सं वि, यम तत्वा धिय गय, ॐ औं च धु नू याय, चाम  
धुला घन रे नवाय, एकाम क कथ, महा साकार्य, चमय पूष्य पाइकी  
॥ उल न ॥ ॐ कौ सं य नू य तत्वा धिय गय, ॐ श्रीं श्रीं अति च छि कार्य, महा स  
सहा न रे नवाय, दवी काट महा कथ, गिवला कार्य, चमय पूष्य पाइकी







काये, महासुखा, सहायतेन वाय, घनादनाय, वसिष्ठ २ स्त्राहा ॥ धनं  
चरि ॥ यद्विदि ॥ अनातं चम्य खानन, थव २ स पूजन धूप, धक मन, म  
॥ अर्च वसिष्ठिय ॥ वसिष्ठे, चम्य खानन कायमास ॥ मूलमन्त्र ॥ गिया  
॥ अर्च ॥ अर्च ॥ वसिष्ठ ॥ आवाक ॥ मूडा ॥ धूप दीप ते द्यद्य ॥ जाय ॥ स्त्रा  
य ॥ दय्या सुन त्यादि ॥ अर्चि च विस्ति स पू अ ॥ X ॥ नाना कोसावि  
उत्ता पूजन ॥ न्यास ॥ उं कं कं म् काय रुट् ॥ उर्वय काय द, कन, म् मन्त्र  
निर्वाण सुय ॥

स ॥ असु याय, म् च पाय पूजा ॥ ॥ उता छदि आस पूजा ॥ ॥ नाना  
जन ॥ स वरुन, आवाहन ॥ विदव ॥ नन्दि ॥ साहा कोस ॥ कृण ॥ त्रामू  
॥ ॥ आध्वज सक त्यादि ॥ ॥ आस ॥ महास यत्रास नाय याइ को ॥ ध्वा  
न ॥ महा वक्र वज्र स्या कं महा यत्रास स विर्त ॥ या सी कृ स सर्व वाय, धान  
निरुजा मूर्ध ॥ सिंधु वज्र क वधुं अ, दाहि मि कृ स मय र्वा ॥ एव कोच उरु  
जां दवा, गक्षा कृधा सि नियनी ॥ मूडा या र्ज क वाध्वा ला, नाना र्ज का ले रु  
ने कल कोलिनी विद्मह मय कापी न्व नीधी मदि नना को मानी य धा य या ॥



॥विष्णु ३॥ षष्ठः ॥ वलि ॥ श्रावा ॥ विमिखामूडा ॥ धूय ॥ दीप ॥ नेवय ॥  
जाय ॥ धान १० ॥ साय ॥ वासुता वल्यादि ॥ श्रुग ॥ आदि ॥ वाक्यन सह ॥ ॐ  
मिका मानी सं द्य ॥ ॥ कुरु कन दूजन ॥ शीय नमः ॥ ॥ सिचु मूह  
दूजन ॥ तश्चाय नमः ॥ ॥ तगा वलि वंधूयाट सयजन ॥ क मया तीर्थ,  
नवया विर्यी ॥ शीम, हागा, जल, नृह्यन्व, रुगवति, वलिवाहा सं पू, च  
धुम्बनी, विमूल ॥ माहका ॥ इवनया ॥ धनयाह, धव २ मरुन, शिया



अतिशयमास ॥ वसिर्वधूयाटस संसू ॥ ॥ यिनायया मन्त्रन धूर्ज  
कुजावनस ॥ ॥ कर्त्तकयामन्त्रन, चामूधुअद्वन्द्वस ॥ ॥ इमाशया  
मन्त्रन, योधूयाटवसिस ॥ ॥ ईखायिखा, ॐ आदिलाकया लन विय ॥  
॥ ॥ धनधूननराव, वलामूरुर्लशसठाव ॥ ॥ एकास्ता  
॥ ॥ ह्यकाजयसुयमन्त्र ॥ रुकाल, सुकाल ॥ ॥ अद्यात्र, वज्र, वगिसी  
३ ॥ उग्रचधुमसुमन्त्र ॥ ॥ ययिनध्वानग ॥ ॥ धननऊयावजजमान

वियाव, कत्रक ॥ ॥ शिवालधनमन्त्रनऊमलय, शिवासी, ऊजः  
मानस्यैकत्रक ॥ ॥ सीखविये ॥ ॥ सवर्लानि ॥ ॥ यूनयूजन ॥ ॥ नूड  
चधुअदि ॥ ॥ अगिगाऊदि ॥ ॥ उग्रचधुमन्त्र ॥ ॥ यिखा १ ॥ ॥ यगिहा ॥ ॥ यगि  
हिगासिदवसित्यादि ॥ ॥ गतावसिदिसीह ॥ ॥ वरुमसिदवसि ॥ ॥ सु  
मयवसि ॥ ॥ धनयोधूयाटवसिस ॥ ॥ ॥ अऊजादिवसि ॥ ॥ महावसि ॥  
धनर्वधूयाटवसिस ॥ ॥ ॥ तहिल्याकमहावसिन धूनक ॥ ॥ आवा



क ॥ मूढा ॥ विंदुय ॥ धृय ॥ दीय ॥ नेवय ॥ जाय ॥ झुं स्वाहा ॥ झुं स्वा  
 हा ॥ झुं स्वाहा ॥ धनसंधाने ॥ ४ ॥ युक्ताति ॥ मधुचा ॥ य ॥ म ॥ पु  
 दुस ॥ कथाय ॥ साय ॥ सीवर्क ॥ नकिस्त्र ॥ सनानम ॥ महा ॥ मा  
 या ॥ सिंदव ॥ वस्तनी ॥ मध्यतिष्ठा ॥ घट्टमा ॥ स्थामानका ॥ वचूकद  
 तिष्ठदजा ॥ वाकास ॥ महाकाली ॥ मार्कन्देया ॥ जादवी ॥ दयानिर्न  
 सतीयुध ॥ उत्कृष्टा ॥ जासाककागि ॥ विन्दुसेवावास्तुताव ॥ जथावार्न

॥ मयराधादिवाक्क ॥ यातायनयाधम्रात्ररुतिमित्यर्थः जजमानया  
 नासकात्थी, धनक ॥ क्रमामुति ॥ गयनि ॥ उकोनककाय ॥ ~~उकोनक~~  
 य ॥ ॥ गतायाथयाय ॥ गतायति ॥ यहनम्य ॥ त्यादि ॥ सर्वमस्तुमाऊ  
 सत्यादि ॥ सावर्धिसूर्यतनया ॥ सुत्यादि ॥ सावर्धिरुवितामनूयर्थेन ॥  
 सुन्दारियादि ॥ मार्कन्देया ॥ जादवी ॥ यथावार्न ॥ वाक्क ॥ धृथुर्थ ॥  
 ॥ ॥ पुनरुयनि ॥ मूलाविसति ॥ मूविनासा ॥ मूत्रसंकथ ॥ दक्षिना



एकानेक ॥ अश्वयुज ॥ वसि विसर्जन ॥ वसि च्छाय ॥ वंथपाटवसि, यश्च  
वसिया कृष्ण ॥ वसिया खवला, खयाटस, योथूयाटद्वन्द्व, दववयावसि  
वादाधायस ॥ गहस, त्रीयिनायस ॥ ॥ यश्च वसिया जामुन्दा, वसिया  
खवला, खयाटस, दथूयाटद्वन्द्व, दवसकलकस ॥ ॥ वसिया खवला  
खयाटस, योथूयाटद्वन्द्व, चकदात ॥ ॥ योथूयाटवसि, यश्च वसि  
या, वद्रक, याग्नि, हमाशुक्ल ॥ ॥ शास्त्रेवद्य, पिपूत् ॥ ॥ ईश्वर

यिंखा ॥ कृष्णसुजा, दथू, सिखमयुजि ॥ ॥ थयाजवला, त्रुमाट ॥  
॥ थयाखवला, करुग ॥ थगतवसि च्छायविधि ॥ ॥ वाधावदायक ॥ ॥  
साक्षिधाय ॥ ॥ थडुलिसुखानकोयाव, जजमानस्कृत ॥ ॥ जजमा  
नस्य, वाक्कनगाम्बूरीदयात ॥ ॥ काकाहानयार्त, वक्कनादि, खानक  
विये, सकनद ॥ ॥ छुति याइकृष्णनिनसयाविधि ॥ ॥ ॥  
गतामताविययाविधान ॥ ॥ खान, पूजाश, वडिम्यात्र ॥ ॥ थगतद



यकाव ॥ ॥ संखहाय ॥ उका न वायु विजहादि ॥ चरु, सिधु, खान  
 न ॥ ॥ पित्त लव श्रीव ल्य ॥ गुन न मलका नादि ॥ उग्र च धु न्यास ॥ जलया  
 य, श्रुधया य पूजा ॥ ॥ उग्र हृदि, श्रा लय पूजा ॥ ॥ सर्व लान श्रा वा  
 रुत ॥ शिव व ॥ गिव, गकि ॥ क्रु स (म) ल क्रु स ॥ रु क्रु ॥ ख धु ॥ रु ग व ति  
 ॥ थ धु लि ॥ थ न स थ व २ म क्रु २ थिया क्रु लि ॥ व ति ने व श म्या ल स ॥  
 ध्रु य ॥ दाय ॥ ने व श ॥ जाय ॥ रु य ॥ सर्व ल ॥ ने ला म धि ॥ व ध्रु का र्थ ॥

मार्क (धु) या ॥ जाद वि ॥ द र्था नू न ॥ श्रु ग धा दि ॥ वा क न सह ॥ न र्थ न  
 ॥ ॥ एकान क ॥ श्रु ध यूर्व ॥ ॥ र्थ का स र्ख विय, स म्ब लान ॥ ॥  
 ॐ नि या इ श्रा दि न, यित का मि ना विय वि मि ॥ ॐ ॥ ग ता इ च ख क्रु क्रु  
 या वि धान ॥ ॥ गा व ना च क ॥ या इ क क्रु (थ) ॥ या य रु का वि स ख ॥  
 ॥ गा वा य रु न, रु थू क्रु क्रु (थ) ॥ ॥ ग ता धृ ग या य रु ज न ॥ या य  
 रु न रु ॥ च व रु ना र्थ न वा न ॥ र्थ का जा ॥ या य ति मा र्क ॥ सं ग ल न ॥ स व



धिया

ना॥ कमुनिक्षय॥ श्रवणयोगसि॥ आह दक्षि ॥ ॥ मनुथ ॥ ॐ जौं मूं ॥ श्राव  
 पार्थि याइ की॥ ॥ गंगा धिलिस कमुदस्वानच्चायमनु ॥ ॐ  
 जौं सदागि वतल्योय ॐ ॐ यचधु माह श्रवो नूनरेववा ॐ य व  
 नूनमहाकृष्ण नूडलाकाय कमुदपूषयाइकी ॥ ॐ त्यादिकमन ॥ श्रमि  
 यादि पूर्वार्त्त ॥ श्रवणयस मध्वली कमुदस्वानच्चायमाल ॥ ॐ ति  
 संयुक्त ॥ ॥ गंगालीं काजा वन्दुत वति वियमनु ॥ ॐ जौं ॐ ॐ यचधु

माह ग्वरी, नूनरेववाय, जवादनाय वसि गृह २ खाहा ॥ ॐ ह्यादि कम  
न, नू ग्यादि, पूर्वार्ति, ह्यं का जास वसियमाल ॥ वसि सीक मूद खान  
छायमाल ॥ ॥ गता यूनन ह थू (थं) सी पूर्व्यायमाल ॥ ॥ ॐ ति ईवा  
खकू कू विधि ॥ ॥ गता ति नारवकू कू या विधान ॥ ॥ ताव जाक ह  
थू (थं) ॥ पाय रुका वि संख ॥ ॥ गता यूनन ह थू कू कू (थं) ॥ ॥ गता  
मय सु सया यूनन ॥ नक वन्दया उत् खान ॥ याव क जा ॥ (थं) ॥ गटल



स॥ यत्नमाह॥ कंचला॥ हिखावला॥ कर्पूवधूय॥ दूवदन्ति॥ मयवसि  
 ॥ मनुध॥ उंजौमू॥ मयमज्जतयायायाइकी॥ ॐ तिमयंरुसंसीयुअ॥  
 ॥ गताथवि ॥ तिस, याइतिस्वानच्चायमनु॥ उंजौंस्ववत  
 चाय, उंउं चधु ॥ अये, कामात्री, चधुरेच्चाय, कालापूर्वमहाकृष्ण  
 अग्निताकाय, या ॥ द्रुतिपूष्ययाइकी॥ ॐ ह्यादिकमन, दक्षिणादि, अ  
 ग्नियश्चर्न, अक्षयगुप्त, मध्वत्, याद्रुतिस्वानच्चायमाल॥ ॐ तिसंयुअ॥

मध्वत्

॥ ॥ गताचकसातिकजासवसिविरामनु॥ उंजौंउंउं चधुअये, कामा  
 त्री, चधुरेच्चाय, नकसाह्यादनाय, वसिगृह २ स्वाहा॥ ॐ ह्यादिकमन  
 दक्षिणादि, अग्नियश्चर्न, नकसातिकजासवसिविरामाल॥ वसिसंयाद्रुति  
 स्वानच्चायमाल॥ ॥ गतायजर्न, हथुर्थ, संयुधुयायमाल॥ ॥ ॐ  
 तिमिवाखकृद्रुविधि॥ ॐ ॥ गतावाधकेकृद्रुयाविक्षन॥ ॥ गताच  
 नाचक, हथुर्थ॥ यगश्चकाविहख॥ ॥ गतायजर्नहथुर्थ॥



गंगा मन्त्रा ययुजते ॥ चतुस्रमचत ॥ मलिखान ॥ खिचलिजा ॥ यत्नस्य  
 ॥ यत्नमाह ॥ कसला ॥ आधसला ॥ सधलासधय ॥ वसंगतति ॥ लाउतदकि  
 ध ॥ मनुध ॥ उं को म ॥ मज्जतयागये योइका ॥ ॐ तिमपत्त सं यज ॥  
 ॥ गंगा यधिलिप्त ॥ मलिखातकायमनु ॥ उं को नं विद्या तत्वाधि  
 यतय ममचउना यिकाये वेकवी काधरु नवाय अहदात  
 महाकृते विष्णुला काय मलि प्रप्ययाइका ॥ ॐ त्यादिकमन

नेमत्यादि दक्षिधनं श्रुतयमस मध्वत्वं मलिखानकायमास ॥ ॐ  
 तिमपत्त ॥ ॥ गंगा खिलिनि काइ म ॥ वलिदियम ॥ ॐ को नं  
 जं वधुनायिकाये वेकवी काधरु नवाय विवेतादनाय वलिगद  
 ॥ ॐ त्यादि कुमन नेमत्यादि दक्षिधनं खिचलिजास वलिवि  
 यमास ॥ वलिसे मलिखानकायमास ॥ ॥ गंगा ययुजते ॥ के थुथे मं  
 धुधयायमास ॥ ॥ ॐ तिचाथककू वेकवी उत्तयोविधि ॥ ॐ ॥



नगायशक्रकृयाविधानं ॥ ॥ गायत्र्या च क. इ. थू. (थै) ॥ गायशक्राविम  
य ॥ ॥ गगायूजान इ. थू. क. कृ. (थै) ॥ ॥ गगाकीजियायूजानं ॥ क  
क्रमचन ॥ मूगजा ॥ सा. (धै) याय ॥ खनूगमारु ॥ याकहा ॥ मला. नीलधय  
॥ द्रुमसुसि ॥ मूतिदकि ॥ ॥ सधरुसुखान ॥ मनुध ॥ ॐ कौ मू ॥ कंजिया  
गाययाइकी ॥ ॐ ति कंजियायूसुय ॥ ॥ गगाथविमिस ॥ ॥ सधरु  
सुखानचायमनु ॥ ॐ कौ मी मायातत्वाधियगय. ॐ ॐ च ॥ ॐ विमि

वावाहि. उमरुकेववाय. जयनिमहाशुण. उलाकाय. वंधूवियूष  
याइकी ॥ ॐ त्यादिकमन. यम्विमादि. नेमत्यानं. मूखययस. म. (धै) ल.  
सधरुसुखानचायमास ॥ ॐ तिसुयय ॥ ॥ गगा मूगजाद्वन्दुसुव  
लिवियमनु ॥ ॐ कौ ॐ ॐ च विमि. वावाहि. उमरुकेववाय. मूगदादना  
य. वलिगुट १ खाहा ॥ ॐ त्याकमन. यम्विमादि. नेमत्यानं. मूखयय  
स. म. (धै) ल. मूगजास. वलिवियमास ॥ वलिस. सधरुसुखानचाय







मध्यस्थं, ठाजासु, वलिवियमासु ॥ वलिसं, नृयखान, चयमासु ॥ ॥  
 गतायुजनं, इथु(थं), संयुयमासु ॥ ॥ ॐ तिष्ठति कृष्णं च यनी  
 उत्पत्ति या विधि ॥ ॐ ॥ गतासुगमिकृष्णया विधान ॥ ॥ गताचयाचक, इ  
 थु कृष्ण(थं) ॥ यययका विमख ॥ ॥ गतायुजन, इ(थु कृष्ण(थं) ॥ ॥  
 गताचकायाययुजनं ॥ नकचन्दनचरु ॥ हिजा ॥ हिजाया ॥ कायलिखान  
 ॥ चनामा ॥ ॥ अकना ॥ ॥ मृन्मृन्काचना ॥ उत्तसि, तिष्ठति ॥ तिष्ठति दे

वनीयमगत्या विधान २  
 क्रिष्ण ॥ गीखन्दधूय ॥ मन्त्र ॥ ॐ क्रीं ॥ नकयायाययाइकी ॥ ॐ तिस्  
 दृष्ट ॥ ॥ गताथुतिस्, कायलिखा ॥ नकामन्त्र ॥ ॐ क्रीं ॐ ॐ च  
 पुन्रयाये चाम् ॥ अली वनरं नवाय ॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं मन्त्रं ॥ का  
 य, कायनिकयूषयाइकी ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
 सययस, मध्यस्थं, कायनिकखानकायमासु ॥ ॐ तिस् दृष्ट ॥ ॥  
 गताहिजा वन्दस, वलिवियमन्त्र ॥ ॐ क्रीं ॐ ॐ ॐ च पुन्रयाय, चाम् ॥ अली



घनेरु प्रवाय, वकीदनाय, वलिगृह २ खाहा ॥ ॐ ह्यादिकामन, उरुनादि,  
 वायुयानं, अक्षययस, मध्यत्व, रिजासु, वलिवियमाल ॥ वलिमं, काय  
 विक्रान्तकायमाल ॥ ॥ गंगा यजन, कथं (थं), सैयर्थयायमाल ॥ ॥  
 ॐ तिसयतसिक्रक, वाम् अउत्यरि, याविधि ॥ ॐ ॥ गंगा मृत्ति याविधि  
 न ॥ ॥ गंगा वचक, कथं कृक (थं), ॥ पाण्डका विमख ॥ ॥ गंगा द  
 जन, कथं कृक (थं) ॥ ॥ गंगा खिल पाण्डक जन ॥ वडमसवत ॥ जिनि  
 मृदुमी, नवमी, दशमी धसा कृ पृथराज यादक माल ॥ ३

खान ॥ खिलजा ॥ इइयाय ॥ खलुगिमाउ ॥ दाकना ॥ ससया ॥ अयवा सुधया ॥  
 रुटिकदकि ॥ मनुध ॥ ॐ कौ मृ ॥ कास यायाय याइकी ॥ ॐ तिसैयथ ॥  
 ॥ गंगा थलु सिस, आनिखान, ॥ काय मनु ॥ ॐ कौ रंय नूय नलाधिय  
 य, ॐ ॐ ॐ मृत्ति चलि काये म ॥ ॥ तिसैयकी सैहा सैहा प्रवाय, देवाका  
 ट महाकृय, गिवला काय, आता ॥ पृथयाइकी ॥ ॐ ह्यादिकामन, कुी  
 ॥ नादि, उरुनातं, अक्षययस, मध्यत्व, आनिखानकायमाल ॥ ॐ



तिसंयुक्त ॥ ॥ गता त्विसजावन्दुस्, वलिविथमन् ॥ ॐ ऊँ श्रीं श्रीं ॥ १ ॥  
 ध्रुवाय, महासन्ना, सैतानलेववाय, श्रीसादनय, वलिविथमन् ॥ १ ॥  
 ॐ ह्यादिकमन्, ॐ गतादिउरुनाक, मृदुमन्, मध्वत्, श्रीसादनय  
 तिवियमात् ॥ वलिसं, ॐ त्विस्वान्कायमात् ॥ ॥ गतायुजन, इथुर्थ,  
 सैधुर्थयायमात् ॥ ॥ गतिश्रुतिक्र, महासन्ना, उत्पत्ति, याविधि ॥ ॥  
 ॐ गतानवमीक, उद्युवध, मध्वत्, याविधान ॥ ॥ गतानवमीक, इथुर्थ

इथुर्थ ॥ यायुका विस्व ॥ ॥ गतायुजन, इथुर्थ ॥ ॥ गतायुका  
 यायुजन ॥ चतुसमचन ॥ चकायाय ॥ नवमीस ॥ स्वधुमगयाय ॥ स्वधुमग  
 याहियाय ॥ उकखान ॥ स्वलुनिमार ॥ सुदक्षिण ॥ महान् ध्रुव ॥  
 ॥ मन्त्र ॥ ॐ ऊँ श्रीं ॥ चकायाययाइकी ॥ ॐ तिसंयुक्त ॥ ॥ गतायुधिसि  
 स, उकखानका ॥ यमन् ॥ ॐ ऊँ श्रीं वाजयद ॥ ॐ उद्युवध ॥ उद्युवधनम  
 दनीरुं सदा ॥ ॐ चक्र ॥ १ ॥ श्रीमीरुं स ॥ मन्त्र ॥ ॐ न, उद्युकाहि न



लाधियतय उग्रचभय इीधनलाकाय उकयूषयाइकी ॥ ॐ ह्याक्रमन  
 म(ध्वादि) इीधनान् थव २ मज्जन उकल्लानकायमास ॥ ॐ मिसेयया ॥  
 गगावकाद्वन्दस् वसिवियमन् ॥ ॐ कौवाजयदम् ॥ उग्रच (धुवनमर्दना  
 ईं ॐ सदानक २ स्त्रीमीई २ ४ मयहन मृ ॥ उग्रच ३ छिदयाये वकाद  
 नाय वसिष्ठक २ स्त्राहा ॥ ॐ ह्यादि ३ ॥ क्रमन म(ध्वादि) इीधनान्  
 हिजास् वसिवियमास ॥ वसिस्त ३ ॥ कल्लानकायमास ॥ ॥

गगायजन इधु(थं) सैयूषयायमास ॥ ॥ ॐ निनवमीकृद्र उग्रचभ  
 उग्रयायजाविधि ॥ ॐ ॥ गगादगमीयाविधान ॥ ॐ इ वसिममास ॥  
 वजिहयानखाय ॥ उक्तल उजाममास ॥ स्नानकार्यममास ॥ ॥ यज  
 न ॥ नागसा उ(थं)याय ॥ मनागसा ॥ कृसन्नादिन कृम सनाययाय ॥  
 थधुति स्वधु रुगवति स्वतिन कृतालेनयाय ॥ वसो नलदाव याथ  
 साफयाय ॥ वसिक्काय ॥ उजामान स्वसि कसन ॥ नाहानस इधु(थं)द



कृष्णजा ॥ उवाध्यास्य, खलु ज्ञाय, गृह नयादिनादवाह्यादि ॥ निवर्द्धन ॥  
 मिव, मकि सु, अविसेख, सग्य नादि, आमी चोद ॥ आचार्यस्य, दय्यचून  
 यदयाव, ऊजमानलाय ॥ वाहान, ऊव, खव, गिन ॥ धान ३ ॥ ज्ञाय, केन  
 ॥ कृडाव, तचक ॥ वाहासुसं कय ॥ खानन चूचक ॥ धधिलिमवविस्थत  
 ॥ कृष्णकायाव, नाशानसुनिरादवा, यदयाव ज्ञाय ॥ स्वाससाचक ॥ द  
 नयान, असि नतचक ॥ धूधचिच ॥ आनधि ॥ यासन ॥ दिगचाचक ऊश्या

याय ॥ गमनचार्थवाहायस्यादि ॥ ॥ ऊवयायुविद्रवास्याख, नन्दि कय  
 नतजानक ॥ ॥ वदियनिस्थ, कृष्णकन, सिन्धुतमरुमिर्गि कि कृष्णजास्य  
 ॥ आचार्यस्य, धधिलि, कृष्णजास्य ॥ ॥ दवसेवासेहिकस्य, रुगवतिठा  
 स्य ॥ ॥ ऊजमानन खधुजास्य ॥ धकमन, वलिसाहाऊवनयाव ॥ रुति  
 यनिहन, वंयूचकाव, कलकनेहायकाव, वंक्रलितानसुविज्ञाचक ॥  
 ॥ ॥ वंक्रलिसु, खधुरुगवतिहं, वंथनकाव, गृहयग, वलि, मधया



उ. थन लं चा या वत ॥ यजाश १ वति १ नेवद्य १ कास्यत ॥ ॥ रुगवतिया  
ऊवसु. खधु ॥ लेखनहायाव. चरु. सि. च. खानत ॥ ॥ तता यजन ॥ द  
वनचायहिक कवा. न क सनयाय ॥ ॥ शितलनाचस्य ॥ गुन नमस्का  
लादि ॥ न्यासादि ॥ ऊत्. अर्घयाय यजन ॥ ॥ उगद्यु द्वि. आत्म यजा ॥ ॥  
संवत्सन. आवाहन ॥ शिदव ॥ नूदच धादि ॥ ॥ आत्त ॥ सिंह. महिषसु  
म. निस्रसु. ॥ उद्यच धाया. शियाऊरति ॥ शिषा ॥ अउऊ ॥ चसि ॥ त्वाक

महावसि ॥ श्वयदाय. नेवद्य ॥ उाय ॥ क्ताय ॥ मार्क धुया. यादवी ॥ अथा  
वान ॥ वाय ॥ खमकाया संयुध देवा च यजा. ऊजमान सनामकास्य धु  
नक ॥ उंतिदमि. नवयया. खमकाया विधिसमाय ॥ • ॥ मऊतथेख  
धुययमात ॥ ॥ खधुऊयययात पूजा ऊ २ लिमिया. वलिया ३  
सन्दा वरु २ ॥ पृथराऊनयात कमाल ॥ ॥ नवनायखडाभास. वलि  
यात १ अर्घयाय १ ॥ शितलनाचम ॥ अयादि ॥ गुन नमस्का न ॥



या सः ॥ जलपात्र अर्घपात्र रुद्रपुत्रि आत्मपूजा ॥ माननीय ॥ १०८ ॥ यैव  
वलिदद्यात् ॥ ॥ श्रीसम्बर्हान आवाहन ॥ विद्वत् ॥ नृपयुज्यदि ॥ अ  
सनपूजासंधान ॥ शिवाञ्जलिः ॥ मङ्गलवलिः ॥ मालकसंश्रियाञ्ज  
लि वलिः ॥ लोकमहावलिः ॥ आवाह ॥ धूप दीप नैवेद्य जाप ॥ स्नान  
स्नानेन मनस्य माल ॥ श्रीगङ्गा नमोऽस्तु ॥ चकानक ॥ अमृतपूत्र ॥ वलि

विसर्जन ॥ वलिवाहाधायसंकाय ॥ सप्तपुत्र अमुमकुनसनकर्ता ॥ ॥  
॥ ॥ पूतः ॥ वलिसंपूजायाय ॥ वलिया ॥ अर्घपात्र ॥ तय ॥ रुद्रवलि  
याकवन वलिकुयात ॥ तय माल ॥ ॥ दवस्तान यरुस्तान ऊऊमकाय  
पुण्यादि ॥ वाय ॥ सर्वपुत्रवत् ॥ ॥ धिलिलि सिंधुयावकास्यता ॥  
इह ॥ दकागया छलिहलावत ॥ वलि दवलया वलिवाहाधायस



काय ॥ साकीधाय ॥ ॥ बलक्रिणनिबलविमुने खमनत्याकावला  
यमाल ॥ ॥ बाधवदायका ॥ ॥ उदयानिजानि ॥ ॥ कदिय ॥ ॥  
गठनिनमनद ॥ ॥ निबल ॥ ॥ निबल ॥ ॥ निबल ॥ ॥ निबल ॥ ॥ निबल ॥ ॥  
उदय ॥ ॥ ॥







१षष्ठी कृ. कृ. मधुपाशु. एष  
लोवनवर्ग. त्रयस्वान. दा  
नेजा. कष्टि. लेह. गा. द.  
वृत्ताला. दि. यूलो. वाल  
धूय. सनिकर्ध. धा. जे. धी. ख. त  
कि. एम. ॥

१सफमीकृ. कृ. नक. पा. उ. न  
क. त. न. द. न. व. क. दि. जा. दि  
या. न. का. या. ति. खान. व. क. ता  
मा. ट. अ. क. लो. म. ल. म. ल.  
का. च. लो. ड. ल. शि. सि. न. वि.  
सि. सि. क. ल. य. कि. एम. जी. ख  
अ. धू. य. ॥

१अकृ. मी. या. खी. ल. या. न. व  
तु. थ. म. व. क. जी. त. खान. खी  
ले. जा. इ. द. या. ख. ए. व. ल. ति. मा. द.  
दा. क. लो. सरा. नो. धू. य. वा. य  
धू. य. ॥

१नवमी. नक. पा. त. व. तु. य.  
म. थ. त. न. व. मी. म. ख. ल. म.  
स. या. लो. ख. न. म. श. या. दि.  
या. ख. १. तु. क. खान. ख. ल.  
ति. मा. द. ल. ति. कि. एम. म. दा  
धू. य. ॥

१८५मी



एषादूकूँ दधिदिविद्वेषाणवतुशमच ते वचस्वान  
या ले दधिपात्र ध्वनका वृनिमारे क्काश गा दाक  
ना श्रीखलुधूय लेंदाकेष्म यताऽसि ॥ ७ ॥

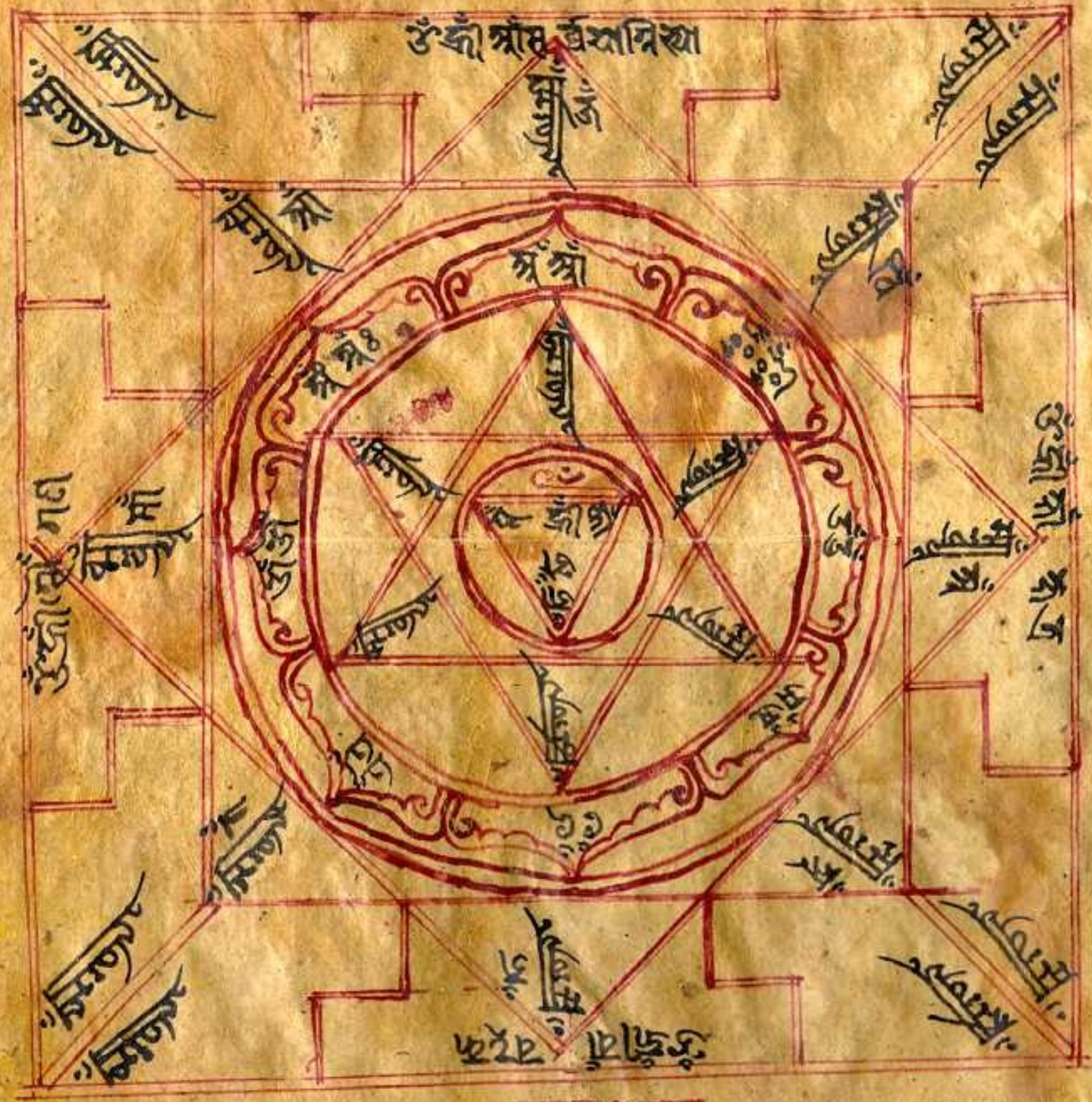
रद्वितीयाकूँ दृगपात्र श्रीखलुध्वनवतस्वान

द्वलपात्र शंभुजा यापति माह उं गतला

संवला सुतुनी श्रयसने गयान सिडाहा दे किंल्ल  
रद्वितीयासेकूलपात्र नक वदन पात्रु लस्वान  
या वक जा ॥ १॥ थ ॥ षट् नय नलमाह कंवला  
दिस्वा डाता कर्णनधूय धूलद किंल्ल खयलेसि  
रखतुथी कूँ षट् नसे यानु नलमा टं केश  
ला व्याथलला सथला सधूय डातग तसि लाह  
तदकिंल्ल ॥

पञ्चमीया कीडिपात्र कंकमञ्जतं म कडाशा  
ध्यानु चलतमाह व्याकटा स ला मिल  
द्वय दृम्वनसि नूतिद किंल्ल यथशा लस्वान





ॐ ह्रीं श्रीं वरुणाय नमः

ॐ श्रीं

ॐ ह्रीं श्रीं वरुणाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीं वरुणाय नमः

उपनिषद्

ॐ ह्रीं श्रीं वरुणाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीं वरुणाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीं वरुणाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीं वरुणाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीं वरुणाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीं वरुणाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीं वरुणाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीं वरुणाय नमः







ऊमना, कवली, कोमकी, गन्धकी, तमदायी, आकष, कम्प

मिद, गकि, खघु, एगवनि, थल्लि

इक्रथियाद्यासथन

ब्या. डा. सि. प्रायवति.

卷之五

五

五

॥ ३ ॥

三  
 一  
 二  
 三  
 四

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

在

1552  
1553  
1554

कर्मलज्जाल  
मूर्धन्या

वसि  
अथर्ववेद,  
वसि  
अथर्ववेद,  
वसि  
सामवेद,  
वसि  
अथर्ववेद,  
वसि  
अथर्ववेद,

卷一百一十五